

## पद ८८ (हिंदी)

(राग: मांड जोगिया - ताल: धुमाळी)

या मुख से हरनाम ले बे मूरख मनुवा ।।ध्रु.।। या मुख से हरनाम  
कहते रहना । कुबुद्धि वासना छोड़ दे बे मूरख ।।१।। फिर  
पछतावेगा हाथ नहीं आवेगा । मनुख जनम अवतार तोहे बे ।।२।।  
माणिक कहे समज मन मूरख । फिर पछतावेगा सुन सुन रावे  
बे ।।३।।